॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

१५८

श्रीईश्वरकृष्णविरचिता

गौडपादभाष्यसहिता

सांख्यकारिका

'भाष्यभाववर्णिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता

व्याख्याकारः

न्यायाचार्य–पोष्टाचार्य–

पं० श्रीज्वालाप्रसाद गौड़

वाराणसीस्थ–श्रीसंन्यासि-संस्कृत-महाविद्यालयप्राध्यापकः

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-२२१००१

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA
158

SĀMKHYAKĀRIKĀ

OF

ĪSWARAKRSNA

Containing

GAUDAPĀDABHĀSYA

Edited with

'Bhashyabhavavarnini' Sanskrit & Hindi Commentaris

By

Pt. Jwala Prasad Gaud

Ex Professor, Sanyasi Sanskrit Mahavidyalaya, Varanasi

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI

भूमिका

प्रारंभ से ही दर्शन दो धाराओं में विभाजित हुए देखने में आ रहे हैं। जिनमें एक भारतीय दर्शन-धारा है और दूसरी पाश्चात्य दर्शन-धारा है। भारतीय दर्शन-धारा भी दो धाराओं में विभाजित है, आस्तिक दर्शनधारा तथा नास्तिक दर्शन-धारा। इनमें छः आस्तिक दर्शन हैं और छः ही नास्तिक दर्शन हैं। "नास्तिको वेदनिन्दकः" अर्थात् वेदोक्तमार्ग का समर्थन करने वाले दर्शन आस्तिक दर्शन कहलाते हैं। और जो दर्शन वेदोक्त परलोक एवं ईश्वर आदि का खण्डन करने वाले हैं, उन्हें नास्तिक दर्शन कहते हैं। कहा भी है—

नास्ति वेदोदितो लोक इति येषां मतिः स्थिरा।
नास्तिकास्ते तथास्तीति मतिर्येषां त आस्तिकाः॥

न्याय-वैशेषिक-वेदान्त-मीमांसा-सांख्य और योग ये छः आस्तिक दर्शन हैं। और जैन-चार्वाक-माध्यमिक-योगाचार-सौत्रान्तिक तथा वैभाषिक ये छः नास्तिक दर्शन हैं। इसके अतिरिक्त माध्व-रामानुज-निम्बार्क-वल्लभ-शैवागम एवं पूर्णप्रज्ञ आदि दर्शनों का इन्हीं दर्शनों में अन्तर्भाव हो जाता है।

दर्शन शब्दार्थ

"दृश्यते=ज्ञायते=विचार्यते अनेन इति दर्शनम्" अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाय, जाना जाय अर्थात् सद्-असद् वस्तु का विचार किया जाय उसे दर्शन कहते हैं। किसी वस्तु के तात्त्विक अर्थात् सच्चे स्वरूप को जान लेना ही दर्शन शब्द का अर्थ=प्रयोजन माना गया है। यह दृश्यमान चराचर विश्व सत्य है कि मिथ्या है, जड़ है कि चेतन है, प्रकाश है कि अन्धकार है, सुख-दुःख आदि के द्वन्द्व से रहित है अथवा सहित है, आधि-व्याधि-जरा और मरण की भीषण कथा की व्यथा से समन्वित है अथवा निरन्वित है, इत्यादि विषयों का विचार भी दर्शनशब्दार्थ के अन्तर्गत ही माना गया है। संसार क्या है? इसका वास्तविक स्वरूप क्या है? यह नित्य अथवा अनित्य है? संसार के अन्दर रहकर सुन्दर एवं सुखपूर्वक जीवन बिताने का क्या साधन है? इत्यादि समस्त विषय भी दर्शनशास्त्रगम्य ही हैं।

दर्शन भी एक शास्त्र है। जैसे व्याकरण-साहित्य एवं ज्यौतिष आदि स्वतंत्र शास्त्र हैं, उसी प्रकार दर्शन को शास्त्र की संज्ञा प्रदान की गयी है—

शासनात् शंसनात् शास्त्रं शास्त्रमित्यभिधीयते।

यहाँ पर 'शास्' धातु का अर्थ आदेश प्रदान करना, आज्ञा देना आदि माना गया है। और 'शंस्' धातु का अर्थ विचार करना, निरूपण करना, प्रतिपादन करना आदि माना गया है। यह 'शासन' शास्त्र भी विधि-निषेधात्मक दो प्रकार का होता है। "स्वर्गकामो यजेत" यह विधिशास्त्र है। और "न कलञ्जं भक्षयेत्" निषेधशास्त्र है। एवं "अग्निषोमीयं पशुमालभेत" यह विधिशास्त्र है, "मां हिंस्यात् सर्वभूतानि" यह निषेधशास्त्र है। दर्शन भी शास्त्र है, इसी दृष्टिकोण के आधार पर कुछ विद्वानों ने व्याकरण एवं साहित्य आदि शास्त्रों को भी 'दर्शन' की संज्ञा प्रदान की है। जैसे—न्यायदर्शन-मीमांसादर्शन-सांख्यदर्शन आदि दर्शनों को दर्शन संज्ञा प्रदान की गयी है और वह स्वाभाविक है। दर्शन इस चराचर दृश्यमान मिथ्याजगत् के अन्दर सत्य की खोज करता है एवं इस मिथ्या जगत् के आधारभूत उस वास्तविक तत्त्व का पता लगाता है। अनेक में एक का असद् में सत् का अन्वेषण करता है। इस दृश्यादृश्य जगत् के अन्तर्यामी परमतत्त्व ईश्वर का अनुसन्धान करता है।